मन को दुनियावी इच्छाओं से साफ़ करो

मनुष्य गुरु- कृपा या ईश्वर-कृपा के लिए दुआ करता रहता है लेकिन गुरुजनों का कहना है कि यह भूल है. गुरु-कृपा या ईश्वर-कृपा हर समय हो रही है, एक पल भी बंद नहीं है. अगर वह बंद हो जाय तो ज़िंदगी नहीं रह सकती. फ़र्क़ सिर्फ महसूस या गैर-महसूस (आभास - अनाभास) होने का है. जिसने अपना पात्र बना लिया है, वह ज़्यादा कृपा महसूस करता है और जिसका अभी अधिकार नहीं बना है, वह कृपा महसूस ही नहीं करता. कृपा का महसूस होना या न होना हमारे अधिकार या पात्रता पर निर्भर है. इसलिए कोशिश अपने आप को पात्र बनाने की करनी चाहिए. गंगा बह रही है, लेकिन उसमें से एक शख्स उतना ही जल ले सकता है जितना उसके पास बर्तन है. जिसके पास लोटा है, वह लोटा भर पानी भर लेता है, जिसके पास घड़ा है वह घड़ा भर पानी भर लेता है.

सूरज चमक रहा है, सब पर गर्मी और रौशनी पड़ रही है. जितना जिसने अपने शरीर को रौशनी के लिए खोल रखा है, वह उतनी ही रौशनी और गर्मी पा लेता है. जिसने जितने कपडे पहिने हैं, उतना ही वह उससे महरूम (वंचित) रहता है. आग जल रही है, हज़ारों ही चीज़ें पास रखी हैं. किसी में उसका असर कैसा ही पड़ता है और किसी में कैसा ही.

सब पात्रता और अधिकार पर निर्भर है. गुरु और ईश्वर की कृपा हरेक पर हर समय हो रही है लेकिन जिसने जितने कपडे मन और माया के पहने हुए हैं, उसे उतनी ही कम कृपा अनुभव होती है. जिसने जितना अपने आप को बना लिया है यानी मोह और माया से अलहदा कर रखा है, वह उतनी ही कृपा ज़्यादा महसूस करता है. इसलिए ज़रुरत पात्र के बनाने की है. अपनी आत्मा पर से मन और माया के परदे हटाने की ज़रुरत है. पत्थर, वनस्पति,जानवर , मनुष्य, देवता, संत सब पर उसकी कृपा एक सी ही हो रही है लेकिन अंतर आभास और अनाभास का है. जिसके ज़्यादा आवरण हटे हुए हैं, उसे उतनी ही ज़्यादा कृपा महसूस होती है.

दूसरी बात यह है कि दुनियांदार ईश्वर की कृपा को समझते नहीं हैं. जब आदमी को दुनियां की चीज़ें मिलती हैं, उन में वह खुश होता है और समझता है कि ईश्वर की बड़ी कृपा है. वास्तव में वह ईश्वर से दूर होता जाता है. उसके और ईश्वर के बीच में माया आती जाती है. अगर उसकी दुनियां की चीज़ों पर आघात होता है तो वो समझता है कि मेरे ऊपर ईश्वर की कृपा नहीं हो रही है, हालांकि मामला इसके बिलकुल विपरीत है क्योकि इससे ईश्वर की नज़दीकी प्राप्त होती है.

जब दुनियां की किसी चीज़ से हमें तकलीफ पहुँचती है या वह चीज़ हमसे छीनी जाती है तो हमारे बुरे कर्मों की समाप्ति हो जाती है और जब कोई दुनिया की कोई चीज़ हमें हासिल होती है, तो शुभ कर्मों के फल का अंत भी हो जाता है. जब ईश्वर की नज़दीकी हो जाती है, उसका प्रेम मिल जाता है, बुरे कर्मों को हम छोड़ देते हैं तो बाक़ी सब कर्म खुद ही नाश हो जाते हैं और वह (ईश्वर) सब माफ़ कर देता है. इसलिए उसकी कृपा यह है कि माया के झगड़ों से छूट कर उससे नज़दीकी हो जाय और हमें हमेशा-हमेशा का सुख और दुखों से मोक्ष मिल जाय.

लेकिन दुनियांदार इसका उलटा समझते हैं. वे ईश्वर से छुटकारे के लिए दुआ नहीं करते, दुनियां की चीज़ों को प्राप्त करने के लिए दुआ करते रहते हैं और इस तरह यहीं पर फंसे रहते हैं. दुनियां का एक-एक ज़र्रा, मन की एक-एक ख्वाहिश हमारा हर वक्त विरोध करते हैं जिससे कि हमारा अपने असल (ईश्वर) से मिलन न हो. इसलिए जो आदमी दुनियां की इच्छाओं में फंसा हुआ है वह तो सच्ची कृपा चाहता ही नहीं बल्कि कृपा का विरोध करता है.

जब आत्मा का विकास संतो की कृपा और अभ्यास से होने लगता है तभी मालूम होने लगता है कि असली कृपा क्या है. सांसारिक इच्छाओं से अपने पात्र को बचाना है और यह जितना साफ़ हो जाता है उतनी ही उसकी कृपा अनुभव होती है. इसलिए हमारा फ़र्ज़ है कि अपने मन को हर समय दुनिया की इच्छाओं से आहिस्ता-आहिस्ता साफ़ करते रहें.

गुरुदेव तुम्हारा कल्याण करें.

राम सन्देश : दिसंबर, १९९३